JAAP HARI

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. चाहता हूँ भूल जाऊँ। 1

2. ईश तुम मेरी खबर लो। 1

3. तुम्हारी करते पूजा। 2

4. बिगड़े हमारे तुम बिन काम। 2

5. अपनी अपनी किस्मत जग में। 3

6. मेरी विनती को तुम सुन लो। 3

7. हे हरि याद करें दुख विसरें। 4

8. इन आँखों में आँसू आये। 4

9. इस जीवन में ना सुख पाया। 5

10. निशदिन हम तो नीर बहावें। 5

11. हरिनाम बसे घट माही। 6

12. तुझे हम याद करते हैं। 6

13. मन चल गीत राम के गा ले। 7

14. अपने अपने सुपने लेकर। 7

15. जीवन तुम पर प्रभु है बारी। 8

16. छिपे कहाँ हो कृष्ण मुरारी। 8

17. किसे यहाँ कहना हैं कुछ। 9

18. तुम बिन मेरा जिय न लगत हैं। 9

19. मन गा चरणों में हरि के जा। 10

20. याद तुझी को करते हैं हम। 10

21. जीवन तो मेरा उदास है। 11

22. आंखो में बसा लू तुझे। 11

23. खोजते सुख को फिरें हम। 12

24. मन मोहन मुझ को तुम। 12

25. मन मन्दिर में बसो ईश तुम। 1326. नयनों से निकली बह धारा। 13

27. हरि बिन कोई नहीं सहाई। 14

28. तुम छिपे कहाँ भगवन। 14

29. हरि द्वारे तेरे मैं आऊँ। 15

30. मन उड़ चल नहिं कोई बन्धन। 15

31. आंखों में आंसू हैं। 16

32. शून्य सत्य सब शून्य बीच। 16

33. भजन बिना न पार हो नदिया। 17

34. हरि तू अपना दास बना ले। 17

35. कौन कहेगा हमें यहाँ पर। 18

36. हरि जप तू आकाश भ्रमण कर। 18

37. बसो नयना मेरे सांवरे। 19

38 ढूंढते प्रभु हम तुझे है। 19

39. थक गये हम चलते चलते। 20

40. अकेला हुआ भरी भीड़ में। 20

41. तेरी दुनिया का तू मालिक 21

42. सुखदायक तुम जग के पालक। 21

43. ध्यान लगाऊँ प्रभु जी तेरा। 22

44. अँखियां नीर भरे पथ देखें। 22

45. सब कुछ होता है गलत यहाँ। 23

46. जीवन कर्ज चुकाऊँ कैसे। 23

47. सुपनों की दुनिया में जीते। 24

48. तेरे द्वार हम आये। 24

49. नहीं मिलो ना मिलना चाहो। 25

50. जग के सुख में मिले निराशा। 25

51. हरि बिन कोई नहीं सहारा। 26 52. दूर करो दुख मेरे सारे। 26

53. याद तुम्हारी आ रही। 27

54. मुझ को दे दो ईश्वर तुम पथ। 27

55. बीत रहे पल मन तुम देखो। 28

56. हारे को हरिनाम यहाँ है। 28

57. प्रभु जी इतनी तो तू सुन ले। 29

58. ईश पथ हमको दिखाना। 29

59. तेरी चौखठ पर आये। 30

60. चरणों में तू बसा मुझे। 30

61. डूबी जाये यह गगरी। 31

62. कितने रूप धरो गोविन्दा। 31

63. अपना भाग्य यहाँ हैं। 32

64. चल मन तू उस पार गगन के। 32

65. जपें हम बस नाम तेरा। 33

66. मेरे भगवन आओ तुम। 33

67. प्रभु कहाँ जायें बता हम। 34

68. हरि तुम बिन मैं चैन न पाँऊ। 34

69. हरि मुझ को तुम पार लगाओ। 35

70. श्री हरि मुझको संभालो। 35

71. द्वारे तेरे आये प्रभु जी। 36

72. तुमसे मिलन होगा कभी। 36

73. हरि दुखड़े सब दूर करो अब। 37

74. बहते आँखों से आंसू। 37

75. जीवन में कितने सुमन खिले। 38

76. जीव रोये विरह है जागा। 3877. द्वारे तेरे नाथ खड़े है। 39

78. ज्ञान का सूरज दिखा दो। 39

79. जानते हम ना प्रयोजन। 40

80. तुम बनो निर्मोही न प्रभु। 40

81. जीवन को अन्तिम मंजिल तू। 41

82. जीवन को प्रभु देने वाले। 41

83. पड़ते राम शरण तेरी हम। 42

84. हरि बिन मेरा नहीं सहारा 42

85. सकल जग का तू मही है। 43

86. जलता रहा सदा जीवन भर। 43

87. दास तेरे राम हम हैं। 44

88. हरि हरि भजें शरण हम तेरी। 44

89. कण कण उतारे आरती। 45

90. लाज रखो मेरी गिरधारी। 45

91. हरे राम रामा राम राम। 46

92. टूटे भी तो ऐसे टूटे। 46

93. सभी जाने को आये यहाँ। 47

94. अंश्रुओं से चरण धोते। 47

95. दर्द कहें किससे अपना हम। 48

96. मैं भटकता फिर रहा था। 48

97. पार ले चलो इस नदिया से। 49

98. हरि कैसे मैं तुमको पाऊँ। 49

99. बही जाती जिन्दगी यह। 50

100. तुम नही रूठो हे हरि मुझसे। 50

13

मन चल गीत राम के गा ले, दुख के सागर से तर जावें।

चैन न आवे बिना राम बिन, सुमर पाप सारे कट जावें।

नहिं सहारा और कोई है, नहीं राम बिन ठौर कहीं है।

वह ही पार करेगा नौका, जीवन का बस सत्य वही है।

जग में जियरा भ्रम में डोले, होय कृपा तब ही तम खोवे।

भूल उसे ना कुछ पल बाकी, राग द्वेष में उसे न खोवे।

दूर क्षितिज पर कोई कहता, भूले राम काहे सो रहा।

सांस खजाना लुटता जाता, जान यहाँ न कोई रह रहा।

अपना कौन पराया जग में, मेला खोता जाता क्षण में।

जिसके हिय में राम बसे हैं, अनहद गूंजे उसके घट में।

राम नाम की धुन में खोजा, बहती नदिया इसमें बह जा।

दो पल की उसकी ही लीला, जान समर्पित उसके हो जा।

14

अपने-अपने सुपने लेकर, घूम रहे हैं सब ही जग में।

मेरा सुपना तो तुम ही हो, बस जाओ तुम मेरे दिल में।

इस दुनिया से हार गया, टूटी मेरी सारी आशा।

चरणों में सिर रख रोने दो, अंतिम प्यासी मेरी आशा।

मैं खोज नहीं तुमको पाता, मुझको बस रोना ही आता।

अपराधा किया प्रभु क्या मैंने, यह समझ नहीं मुझको आता।

तुम हमें थाम लो रोते हैं, काटे पल यह ना कटते है।

विरहअग्नि की शीतलता, हमें नहीं अच्छी लगती है।

दिन रात जपें तुममें खोये, तुम रुठो ना जीवन सर्जक।

हर सांस समर्पित हो तुमको, हे दीनबन्धु जग के पालक।

आंसू की गंगा बहने दो, मत रोक मुझे तू बहने दे।

*आंसू खोजें तेरी राहे, यह चैन मुझे ले लेने दे।*15

जीवन तुम पर प्रभु है बारी, रुठो मत तुम कृष्ण मुरारी।

तुझ चरणों तक मैं आ जाऊँ, दे दे सम्बल प्रभु मैं हारी।

जीवन के तुम ही बसन्त हो, तुम बिन सब लगता है खारी।

भटक रहा जग के तम में मै, दो प्रकाश मेरे बनबारी।

अंखियां नीर गिराये झर झर, मन ना लागे मेरा पलभर।

करूँ अर्चना प्रभु तुम्हारी, चाँहू प्यार तेरा बंशीधार।

लुटता रहा जगत में पल पल, आंखे मीची क्यों मनमोहन।

हाथ जोड़ कर विनती करता, सता न मुझको हे मधु सूदन।

तेरी बगिया बड़ी निराली, ूल खिलाये खशबू डाली।

मैं कोने में बैठ रो रहा, जुलम करो ना मेरे माली।

लाज तुम्हारे ही हाथ प्रभु, शरण राख लो हुआ भिखारी।

छवि तेरी को सदा तड़ता, मिल जाओ हे कृष्ण मुरारी।

16

छिपे कहाँ हो कृष्ण मुरारी, भीगी मेरी पलके सारी।

तुम बिन मेरा जिय न लागे, सुन ले दिल की पीड़ा मेरी।

मीरा हुई प्रेम में पागल, छोड़ सभी कुछ प्रीति लगाई।

बु) ने छोड़ा नृप सिंहासन, हरि मिलने की आस लगाई।

तुम बिन दया न कुछ भी होवे, चरण पड़े तेरे कन्हाई।

मनुआ रोवे नयना बरसे, पार करो केवट बन जाई।

हरि हरि कहते जीवन गुजरे, अनजान डगर दिल यह सहमें।

रो रो कर हम तुझे पुकारें, तुम बिन और न कोई थामें।

जग के सारे वैभव फीके, करूणासागर मुझको लख लो।

विरह अग्नि को खूब जला दो, निज प्रीति में मुझको रंग लो।

बीते न यह सारी उमरिया, बिन मिले तुझसे सांवरिया।

*झर झर नीर गिरे नयनों से, प्यार हमें दो वंशी बजैया।*17

किसे यहाँ कहना है कुछ, सब बह रहा सन्तोष कर।

धुन सभी की अलग अपनी, तुझ स्वर मिलें तो बात कर।

रंग बदले हर घड़ी जग, देखकर बैचेन न हो।

मेल पल दो पल यहाँ है, प्यार दे कर ही कन हो।

निजी ले कर वासनाये, जी रहे सब ही जगत में।

संग तू किस किस का देगा, डूब जा तू हरि भजन में।

रहना नहीं कर बुरा ना, तू नियन्ता ना जगत का।

आंसू से नहलाता चल, प्यार से ले नाम हरि का।

जान अपना बस यहाँ क्या, मृत्यु है आँखियां गड़ाये।

देखती जो कर रहे है, ज्ञान हरि की शरण आये।

ना शिकायत हो किसी से, प्यार से भीगा रहे दिल।

हरि चरण रज पा सकें हम, विनती हमको यह दे बल।

18

तुम बिन मेरा जिय न लगत है, कैसे पाऊँ मन तड़त है।

छोड़ हमें छिप गये कहाँ हो, इन आंखियों से नीर झरत है।

दास बना लो करूँ विनय मैं, तुम बिन कुछ मैं और न देखूँ।

जगत भुलैया में मैं फंसकर, तुझे छोड़ हरि कुछ न निरखूं।

कैसा सुन्दर जग है तेरा, जीव जन्तु सब करें बसेरा।

तुम बिन कृपा यहाँ दुख भोगे, जीवन में ना होय सबेरा।

दया करों प्रभु हम निर्बल है, मेरे जीवन का तू बल है।

मेरे प्राण पुकारें तुमको, पार करो नैया डूबे है।

डगर न जाने रोना जाने, कैसे हम तुमको पहचाने।

सब रूपों में तू ही छिपा है, तुम बिन कृपा नहीं हम जाने।

शीश झुकाये ईश खड़े है, ज्ञान दीपक तुम्ही जलाओं।

टूट जायें तब सारे बन्धान, सब मेरा सन्ताप मिटाओ। 19

मन गा चरणों में हरि के जा, हिय उसे बसा सुख पा।

मुक्त होय जग के बन्धान से, तू प्यार उसी का पा।

जले शमा जलता परवाना, जाना नहीं गणित को।

प्रीति डगर की राह अनूठी, मिटकर पाये उसको।

लखे चकोरी उस चन्दा को, हिय में पाती सुख को।

बना वियोगी जो भी हरि का, उसमें पाये सुख को।

बिन पानी मछली तड़त है, ऐसे तड़े हरि को।

जग वैभव पीछे रह जाते, पीवे वह दर्द हरि को।

नैनन में हरी छवि बसाये, समझाये इस दिल को।

नहीं और कुछ उसे सुहावें, विरह सुहावे उसको।

यह पौधाा न कभी भी सूखे, आंसू सीचे इसको।

हरपल प्रभु जी करता विनती, जीवन रटे बस तुमको।

20

याद तुझी को करते है हम, रूठो ना मेरे मन मोहन।

दो दीपक जो जलते मेरे, खोजे है वह तुमको निशदिन।

रमा तुही है सांस-सांस में, जिय लागे ना रोये हरदम।

कभी प्रीति ना मुझसे तोड़ो, इस जग में प्रभु बेबस है हम।

पता तुम्हारा न जाने हम, अंखियां बस यह रोना जाने।

दया दृष्टि से हमको लख लो, मिटे भ्रम तुमको पहचाने।

सब ओर यहाँ है जल ही जल, ना हमें दीखता कोई थल।

मन पाये कैसे चैन यहाँ, गिरते आंसू मेरे हरपल।

जीवन दे कर अब छिपो नहीं,चरणों में सिर रख लेने दो।

बहती जो आंसू की गंगा, उनसे पग को धो लेने दो।

नमन तुझे है चाह रमें हम, नश्वर जीवन ना दिल लगता।

शेष रही जो थोड़ी घड़ियां, ज्ञान हमें दे कहे जो पता। 21

जीवन तो मेरा उदास है, रखूँ नाथ चरणों में सिर है।

मेरे दिल की तू प्यास है, छूट जाते जग के साथ है।

रंग-रंगीली है यह दुनिया, तुम बिन दिल लागे नहीं नाथ।

आंसू गिरते मेरे झर-झर, प्रभु जी चाहता तेरा साथ।

जाते पल यह सोच रहा मैं, कण-कण में हो तरस रहा मैं।

ठगनी माया के चक्कर में, पड़ ईश्वर को भूल रहा मैं।

सुख दुख का है खेला चलता, विसरा तुमको ना तम मिटता।

ना टूटे जंजीर कर्म की, कमल कभी ना हिय का खिलता।

जग की पगडण्डी पर भटके, तरसाते तुम मुझे नाथ हो।

अज्ञानी हैं नाथ ज्ञान दो, सारे जग के तुम पालक हो।

मुझे हटाना ना मन्दिर से, युग कितने बीत जायें नाथ।

सुमरुँ तुझको दिल लगा रहे, अश्रु स्वीकारो मेरे नाथ।

आंखों में बसा लूँ तुझे, कुछ और देखूँ नहीं।

मफ करना तुम मुझे प्रभु, जानता मैं कुछ नहीं।

जगत के तुम हो रचियता, पार तेरा है नहीं।

बह रहे मझदार में है, तुम बिना कोई नहीं।

कृपा तेरी चाहते है, कठिन राहें चल सकें।

प्यारा तेरा चाहते हैं, सुमन दिल के खिल सकें।

दास तुम अपना बना लो, शरण अपनी राख लो।

पार होवेंगे सभी पल, प्रभु मुझे संभाल लो।

दर तुम्हारे का भिखारी, देखता तुझ ओर हूँ।

डर लगे ना बहक जाऊँ, रो रहा मैं भ्रमित हूँ।

मेरे माली सुन भी ले, अश्रु बहते देख ले।

*तुम बिना बनती न बिगड़ी, लाज मेरी राख ले।*23

खोजते सुख को फिरें हम, नीर अंखियों से झरें।

विवश हैं कितने यहाँ पर, तुझे पाये तो तरें।

छिप गये तुम नयन रोते, क्यों खा मुझसे हुए।

रात काली हैं डराती, दूर मुझसे तुम हुए।

तुम सबल हो हम अबल है, थाम लो हाथ हमरा।

बहते नदिया तुम्हारी, डरता है जिय हमरा।

कहाँ पर जायें बता हम, नाम को सदा सुमरा।

चोट पर है चोट खाते, टूट रहा दिल हमरा।

इस जगत के ईश मालिक, बहें आंसू देख लो।

दया तेरी के भिखारी, लाज हमरी राख लो।

शान्ति से जायेंगे पल, तुम बसे दिल में रहो।

तुझे है हम नमन करते, साथ मेरे प्रभु रहो।

24

मनमोहन मुझको तुम, कभी भूल ना जाना।

आंखे यह बरसे हैं, मुझको पार लगाना।

तेरे लेते सुपने, जग में यहाँ भटकते।

वसो हिया में मेरे, उसमें हम सुख पाते।

जल ही जल सब ओर है, दीखे नहीं किनारा।

डगमग करती नौका, तू ही एक सहारा।

सारे ताप मिटा दो, वंशी अपनी बजा दो।

गुण तेरे गायें हम, हिय का कमल खिला दो।

विरह मुझे दे अपना, सारा जग है सपना।

छवि तेरी मन भाई, तुम बिना नहीं जीना।

प्यार मुझे प्रभु दे दो, शरण हमें तुम रख लो।

*जगत रचैया हो तुम, विनती मेरी सुन लो।*25

मन मन्दिर में बसो ईश तुम, बीतेगी यह रैना काली।

तुम बिन मेरा जिय नहिं लागे, मुझे संभालो मेरे माली।

दुखी जीवन तेरी कृपा बिन, नयना बरसें जैसे सावन।

बस जाओ जिसके हिय में तुम, भागे सभी दुख डर लागे न।

भवसागर से पार कराते, तर जाये वह क्यों न कठिन हो।

उसकी याद में आंसू बहते, जीव याद कर सदा सफल हो।

नहीं प्रयोजन तुम बिन हे हरि, उलझ-उलझ हम हारे जग में।

खो जायें तेरी यादों में, जपते-जपते तुमको जग में।

दुख की काली रातों में जब, नहीं दीखे कोई किरन भी।

तू ही दीप जलाता दिल में, बिन तेरे नहीं गति कभी भी।

हारे को हरिनाम कहा है, सुख पर तुझमे सभी छिपा है।

क्षण भंगुर सुख जग के सारे, जपे तुझे वह अमर हुआ है।

26

नयनों से निकली बह धाारा, सच ईश्वर तुमसे कहता हूँ।

मन्दिर में तेरे रहूँ सदा, गीत तुम्हारे ही गाता हूँ।

तुम मेरे जीवन की खुशियां, कुछ भी तुम हो नहीं कमी।

हरि-हरि कहते जीवन बीते, ना हटो नयन से प्यार तुमी।

तुम बिन हारा चल-चल प्रियतम, तुही सहारा मेरे मोहन।

तेरा अनहद गूँजे चहुँ दिश, सुनूँ सदा वन्शी की मै धुन।

कृपा सिन्धु हे जग के पालक, तुम बिन सुबक-2 जिय रोये।

दूर हटाना ना चरणों से, तुम बिन जीवन ना लहराये।

तेरी बगिया में घूम रहा, जो सुमन चढ़ाऊँ ढूंढ रहा।

जो नीर गिरे है नयनों से, उनसे ना ऊपर दीख रहा।

बस नन्दलाल मेरे हिय में, कुछ पल का तो है खेल यहाँ।

*बिछुड़ न जाना पल भर को भी, बिगड़े सब खेला नहीं यहाँ।*27

हरि बिन कोई नहीं सहाई, देखी दुनिया थक कर रोई।

आशा का दीपक तू ही है, मुझको भव से पार लगाई।

दु:ख हरो सब करें अर्चना, प्रेम सुधाा हमको मिल जावे।

तेरी ओर निहार रहे हम, कर्मों के बन्धान कट जावे।

जग के पालक तुझे नमन है, चाहते हम प्यार तुम्हारा।

नीर गिरें है हमें देख लो, तुम ही हो जीवन आधाारा।

जग की भूल भुलैया में प्रभु, कभी नहीं पथ तेरा भूलें।

अपने हिय में तुझे बसाये, जपते रहें न पल भर भूलें।

दो दिन का जीवन है यह प्रभु, सांस-सांस में रमें रहो प्रभु।

न जाने कहाँ जाये नौका, खेवनहार हमारा तू प्रभु।

अश्रु करो स्वीकार हमारे, नहीं और कुछ पास हमारे।

मेरे जीवन के ओ माली, रोते नयना तुझे निहारें।

28

तुम छिपे कहाँ भगवन, हम याद तुझे करते।

नयनों से नीर बहें, तेरी पूजा करते।

बहुत रंग इस जग में, तेरी बगिया के हम।

सब फीके तुम बिन रंग, रूठो मोहन ना तुम।

दुख दूर करो हमरे, जीया न धौर्य धारे।

डगमग करती नौका, प्रभु तू ही पार करे।
मेरा सुपना तू ही, जग मुझे हुआ धोखा।

जी भर-भर कर आता, ना हो हमसे रूखा।

न वासना शेष रहे, शरणा तेरी आये।

कृपा सिन्धु कृपा करो, धुन सुन हम खो जाये।

बिन कृपा नहि सूझे, अनहद चँहु दिश गूंजे।

*सारा जग यह नाचे, वंशी धुन जब बाजे।*29

हरि द्वारे तेरे मै आँऊ, नहिं जग से मोह बढाँऊ।

सुरति रहे बस तुझमें मेरी, जग सहज कार्य निपटाऊँ।

मन ना लागे जग में मेरा, भटक भटक प्रभु मैं जाऊँ।

कृपा सिन्धु शरणागत रख लो, तेरे ही मैं गुन गाऊँ।

अंखिया ढूंढे तू नहि दीखे, जतन नाहिं कुछ कर पाऊँ।

मिले प्रभु जी दया तुम्हारी, भव सागर से तर जाऊँ।

जोगी हुए प्यार में तेरे, धान्य वहीं प्रभु कहलाये।

इन सांसों का नहीं भरोसा, कल आये यह ना आये।

जिसने तेरा नाम जप लिया, छोड़ा सब हुआ जोगिया।

देखे इस दुनिया का मेला, डरे न यम संग हो लिया।

अंखिया रोवें सब है छुटते, दो पल के सब है रिस्ते।

गम ना कर सब खेल उसी का, धयान करो हरि हिय वसतें।

30

मन उड़ चल नहिं कोई बन्धान, पिय में डूब वही सुख नन्दन।

लहर उसी की भूल गये हम, जियरा हमरा करता क्रन्दन।

जब-जब जग के ताप सतावें, याद उसे कर वही बचावे।

उस बिन रोवें हरपल अँखियां, उस बिना नहीं धीरज आवे।

बसो ईश तुम मेरे घट में, नहीं निहारुँ जग के सुख-दुख।

शरणागत लो हार गया मैं, पाऊँ तुझमें ही सारे सुख।

मेरे मन में तेरे सुपने, हरि हरि कहते हरपल निकले।

बही जा रही नदिया हरपल, छोड़ तुझे भटके ना सुन ले।

आंसू आवे ईश रिझावे, इस जग में वह खेल खिलावे।

मत पागल बन प्रीति जोड़ ले, जाते पल यह हाथ न आवे।

जीवन सुख-दुख की छाया है, मनुआ इसमें भरमाया है।

*सत्य यही मिटना है हमको, भूल उसे क्यों दुख पाया है ?*31

आंखों में आंसू हैं, हम तुझे पुकारें हैं।

रुठो ना मनमोहन, प्यार को चाहते हैं।

मेरा दिल व्याकुल है, मिलने को आकुल हैं।

हम तुझे कहाँ ढूंढे, कुछ भी ना सूझे है।

तुम आन मिलो मोहन, बरसे जमकर सावन।

सुन तेरी बन्शी धुुन, यह सफल होय जीवन।

मुझमें कोई ना गुन, सुन ले मेरे भगवन।

तेरी चाहत के फल, तेरा ही यह उपवन।

जग में आये रोते, ना प्यास मिटी दिल की।

हम हुए तुम बिना क्यों, सुन लो तुम इस दिल की।

कटती ना यह राहें, कैसे तुमको पाये ?

हम शरण पड़े तेरी, तू ही पथ दर्शायें।

32

शून्य सत्य सब शून्य बीच, मन शून्य हमारा न होता।

ताने-बाने नित बुन-बुन कर, बैचेन सदा होता रहता।

करता जो शून्य आराधान, पाप मिटे सब जिय हो कुन्दन।

लगी रहे बस लौ ईश्वर में, कट जायें सारे भव बंधान।

कृपा हरि बिन समझ न आये, जपे उसे जीवन तर जाये।

भूल नहीं मेला दो दिन का, हर सांसों में उसे रमाये।

जीवन का बस सत्य यही है, जाना सबको अन्त यही है।

राम नाम में डुबो चदरिया, उससे बढ़कर कोई नहीं है।

अपनी गति से चलती दुनिया, कर्ता बनकर होता दुखिया।

उसे समर्पित हो चलता जा, शान्ति मिलेगी इस डगरिया।

उससे प्यारा ना कोई है, जपे सफल यह जीवन होई।

*हार उसी की जीत उसी की, जाने सन्त महासुख होई।*33

भजन बिना न पार हो नदिया, जप हरि को करुणा का दरिया।

जग के तम में दीप जलावे, रखवाला वह ही सांवरिया।

उसका कर विश्वास हृदय में, वह ही सर्जक वह ही पालक।

बहता चल ले जाती नदिया, मत उदास हो उसके बालक।

सुख-दुख के वह खेल खेलता, बने बाबले जियरा रोता।

जो भी उसको हरपल भजता, उसकी नैया वह ही खेता।

क्या चाह का मूल्य यहाँ पर, सब उसकी मर्जी से होता।

आना जाना सब मर्जी से, जानो मन नहिं बनना कर्ता।

जप हरि जप हरि पार लगावे, कर्ता बन ना जिया दुखावे।

शीश झुकाये तू चलता जा, पाप कटें तू हरि को पावे।

जान समझ हरि को ना भूलो, बिन हरि भजन नहीं पलभर सुख।

मूलमंत्र मन इसको पी लो, जग से लिपटेगा होवे दुख।

34

हरि तू अपना दास बना ले, स्वामी तू अपनी शरणा दे।

जैसा भी हूँ तेरा बालक, मेरे मग के कंट हटा दे।

बन बैरागी जग में घूंमू, यह मेरा जिवडा नही लगता।

प्रभु तू अन्तस ज्योति जगा दे, चमन तुम्हारा खिल-2 उठता।

पाप पुण्य सुख दुख है मग में, पार करूँ कैसे तम पथ में।

बिन तुझ दया चला नहिं जाये, डूबे लुटिया बीच भंवर में।

हरि तुम मेरे हिय बस जाओ, नहीं जगत में प्रभु भरमाओ।

जपते रहे सदा ही तुझको, कर्मबन्धा से हमें छुड़ाओं।

सद्कर्मों में सदा चलाओ, हिय में मेरे प्रेम जगाओ।

दुख ना दे सुख ही दे सबको, झोली खाली तुम भर जाओ।

अबल यहाँ हम बल बस तेरा, कृपा बिना हो नहीं सबेरा।

*जगदीश्वर तुम हमें संभालो, मिट जाये जन्मो का तेरा।*35

कौन कहेगा हमें यहाँ पर, तुम दुखी हो या सुखी हो।

हरि में डुबो दे तू स्वंय को, आहुति यह पूर्ण तब हो।

ठोकर यहाँ पर खा रहे हम, जग धूल को हैं चाटते।

पथ का नहीं हमको पता है, अनजान नगरी घूमते।

हमको विरह तेरा सताता, प्रभु थक गये हम घूमते।

तू छिप गया है छोड़ हमको, अकेले हम है भटकते।

प्रेम के है हम तो भिखारी, वंचित हमें ना कर यहाँ।

कृपा सागर तू कृपा कर, तड़पते हम तो यहाँ।

यह डर रहा जियरा हमारा, कुछ दीखता तम में नहीं।

तुम ज्ञान का दीपक जला दो, हम पा सकें तुमको कहीं।

तुझे नमन है तेरे बालक, यह तेरा ही ईश चमन है।

नीर हमारे प्रभु बहते है, कुछ भी मेरे पास नहीं है।

36

हरि जप तू आकाश भ्रमण कर, जग को अपना नहीं समझ घर।

दो दिन का मेला है यह तो, लीन उसी में होना चल घर।

पाप पुण्य से मुक्त करे वह, हिय के दुखड़े दूर करे वह।

आंखो के मोती जो बहते, उन सबको स्वीकार करे वह।

हरि भज-हरि भज उस बिन नहिं कुछ, यह जग तो झिलमिल सी छाया।

बिन उस कृपा जान ले मूरख, हमें डराबे निज का साया।

सारे सुख परिवर्तित होते, दे जाते है दुख भी हमको।

हरि का नाम एक सांचा है, जप ले देता है सुख सबको।

सदा संभालेगा हरि तुमको, वसा उसे तू अपने हिय में।

कीच कमल का मेल समझ ले, वहीं मेल तू रख इस जग में।

हरि जप हरि जप तू चलता जा, नैया को अपनी खेता जा।

*वह ही पार लगाये इसको, यह विश्वास लिये चलता जा।*37

बसो नयना मेरे सांवरे, तुम ही को पुकारें प्राण रे।

इस जग में जिय नहीं लागे, अंखियां यह बहाती नीर रे।

वन्शी धुन मोहि तुम सुनाओ, इस जग से उतारो पार रे।

बचाओ प्रभु चरणों में पड़ू, लाज तुम्हारे ही हाथ रे।

ूल कुम्हलाया तेरे बिन, माली चमन का संभाल रे।

खिले जो तू दे प्यार अपना, रख अपनी दया का हाथ रे।

प्यासा है जिय रोये अंखियां, तेरे हाथो जगत नाव रे।

आया जग पथ को ना जानू, यदि कृपा हो तुझे पाँऊ रे।

बीत जायेगी सब उमरिया, देख लो तुम हरी यह रोना।

तुमसे अच्छा ना कोई है, मुझको दे मन्दिर का कोना।

तेरी यादें मुझको प्यारी, भटकूँ मैं जगत में घूमता।

नहिं जानता कहाँ जायेंगे, पा जाँऊ चरण को ढूंढता।

38

ढूंढते प्रभु हम तुझे है, अर्चना स्वीकार कर लो।

ईश हमको माफ कर दो, तुम हमारी लाज रख लो।

दीखता न है अन्धोरा, नयन से है जल बरसता।

प्रभु इसे तुम दूर कर दो, तुम बिना जिवड़ा तड़फता।

फिर रहे है हम भटकते, कंटको को सह रहे है।

ईश हमको प्यार दे दो, विरह में हम रो रहे है।

फिरते खाली झोली ले, रूठ नहीं मेरे माली।

तेरे चमन के ूल हम, रह न जाये रात काली।

तुम कृपा बिन है नहीं कुछ, सूखती है ःसल सारी।

बाट हम तेरी निहारे, इस जग में मैं हूँ हारी।

हम नमन करते तुझे हैं, जानते कुछ भी नहीं हैं।

*पथ हमें अपना दिखाना, चाह बस मेरी यही है।*39

थक गये हम चलते-चलते, रोते बीती जिन्दगी।

बगिया तेरी के ूल हैं, स्वीकार करो वन्दगी।

रोते आये हम जगत में, पाई क्यों खुशियाँ नहीं ?

ऐसे निष्ठुर ना बनो प्रभु, बता हमारा हक नहीं ?

प्यार पाने हृदय तरसता, कौन बाधाा से अटका।

भ्रमित हुआ मैं घूमता हूँ, करो कृपा नहीं भटका।

कौन से कर्मों के बन्धान, भोगे हम जा रहे हैं।

जन्म लिये हम इस धारा पर, रुदन ही सुना रहे है।

पिछला कुछ नहीं ज्ञान हमें, भविष्य को नहीं जानते।

कुछ यह पल जो दीखते है, तुमको ईश पुकारते।

तेरी रजा में ही बहते, विनती स्वीकार कर लो।

नयनों में मेरे बसो तुम, पूजा स्वीकार कर लो।

40

अकेला हुआ भरी भीड़ में, संग साथ ना मेरे कोई।

तेरा विरह सतावे हरदम, याद तुझे कर अंखियां रोई।

कृपा करो तुम जग के पालक, सम्बल तुम हम तो है बालक।

सुनकर तेरी वन्शी धुान को, खो जायें सारे दुख सर्जक।

तेरे पथ पर चल कर आवे, नयना झर-झर नीर बहावे।

डूब रही है नौका मेरी, तू ही इसको पार लगावे।

दुख के सागर में जगदीश्वर, मेरा दिल बेहाल हुआ है।

मुझे संभालो हे करुणाकर, तुम बिन जीया तड़ रहा है।

नहीं पता कित जाये किश्ती, अगम अगोचर पार न कोई।

दे निर्मोही हमें सहारा, याद तुझे कर मैं हूँ रोई।

तेरा संग मिले सुख आवे, याद करुँ जी भर-भर आवे।

*तम की चादर में लिपटा हूँ, तुझे पुकारुँ तू ही हटावे।*41

तेरी दुनिया का तू मालिक, नहीं रस्म से हम है वाकिफ।

माफ करो हमको तुम सर्जक, पहुँचे आंसू यह तुझ पग तक।

क्या गायें गीत बुझा यह दिल, न दीखे राह खोई मंजिल।

आदि अन्त का पता नहीं है, कृपा करो तुम रोयें हरपल।

हमें सहारा दे जगकर्ता, कटे रुर जिय मेरा डरता।

तम की चादर में हूँ बैठा, तू प्रकाश कर हे दुखहर्ता।

तेरे गुलशन में प्रभु खिलते, सब दुख को तू ही जाने है।

दुख के भन्जक पीड़ हरो सब, विनय तुझी से हम करते है।

कहाँ जा रहे बहते-बहते, चहुँ ओर दीखता जल ही जल।

पार करो हे ईश्वर हमको, रखते कोई भी हम ना बल।

आंसू से पलकें भीगी हैं, यह कंठ पुकारे है तुमको।

बनो नहीं निर्मोही सर्जक, दे दे वर पायें हम तुमको।

42

सुखदायक तुम जग के पालक, नमन तुम्हें करते हैं राम।

तुम बिन बिगड़े काम हमारे, सुन ले जगत के स्वामी राम।

घट-घट बसे तुझे नहीं पावें, मनुआ भटक-भटक यह जावे।

तेरी दया होय जब स्वामी, तू ही दुख से पार लगावे।

अंखियां नीर गिरायें तुम बिन, कुम्हलाया जीवन का सावन।

हरषे जीवन की यह बगिया, सुन कर तेरी वन्शी की धुान।

जन्मों-जन्मों से भटक रहा, नयन भरे यह तुझे निहारे।

लगते हैं चट्टान थपेड़े, चाह थाम ले हम तो हारे।

जीवन का आनन्द तुही है, कस्तूरी से बसे हिया हो।

इधार-उधार पागल मन डोले, भूल तुझे ना चैन कभी हो।

द्वारे तेरे खड़े मुरारी, ना लौटाना झोली खाली।

अज्ञानी है चाह प्यार की, सूखे फूल लिये हम थाली।43

धयान लगाऊँ प्रभु जी तेरा, बहक-बहक मैं जाऊँ।

जीवन के आधाार तुम्हीं हो, तुम बिन रह दुख पाऊँ।

कोरी आँखें जग में आती, जग सुपनों में खोती।

तुझको विसरा नित यह रोती, फिर भी तुझे भुलाती।

रंग-बिरंगी तेरी दुनिया, मन है मेरा छलिया।

याद तुम्हारी आती है जब, नीर आँख ले रोया।

भूल तुझे नित सुपने लेता, तुझकों दोष लगाऊँ।

तेरे पथ पर चलता जाऊँ, दे वर ना डिग पाऊँ।

भूल न पाऊँ मैं उस पल को, जब रो नीर बहाऊँ।

तुझ बिन जीने से अच्छा है, तुझ चौखठ पर मर जाऊँ।

तुम सर्जक मेरे हो प्रभु जी, तुझको नहिं विसराऊँ।

विसरा कर दुख भोग रहा हूँ, मन कैसे समझाऊँ ?

44

अंखियां नीर भरे पथ देखे, मनुआ अन्धाकार में डूबे।

कर कृपा मोहि पार लगा दो, तुम बिन कृपा न कुछ भी होवे।

तेरे बालक अज्ञानी हम, जाये कहाँ न रस्ता सूझे।

विवश यहाँ हैं हे जगकर्ता, करो दया कोई ना बूझे।

अंखियां भर-भर नीर गिराती, तुम्हें खोजती पर न पाती।

मृगमरीचिका सी भटकन ले, हरपल जहर यहाँ पर पाती।

तुही उबारे हे सुखनन्दन, कट जायें सब भव के बन्धान।

मेरा अपना नहीं यहाँ कुछ, दूर करो भ्रम जग के बन्धान।

पूजें तुझे और सुख पावें, पार नदी जीवन की होवे।

बस जाओ मेरे नयनों में, धौर्य कभी भी हम ना खोवे।

तुझे नमन करते जगकर्ता, सन्ताप हरो दिल है रोता।

*सद्पथ पर प्रभु हमें चलाओ, ज्ञान तुझी से सब जग पाता।*45

सब कुछ होता है गलत यहाँ, जब भाग्य साथ ना देता है।

जो हृदय बसाते हैं हरि को, सद्मार्ग उसे मिल जाता है।

गिरते आंसू न कहे कोई, तू जाम पिला मुझको कोई।

होऊँ तुझ चाहत में राजी, ले अपनी चाहत को रोई।

रुठे तुम क्यों मोहन मुझसे, लीला तेरी समझ न पाया।

जन्मों से मैं भटक रहा हूँ, तेरा ठिका नहीं मैं पाया।

बालक तेरे हम क्षमा करो, अपना हमको दास बना ले।

दूर हमें ना कर चरणों से, तू पुकार मेरी यह सुन ले।

दूर करो दुख हे दुख भन्जक, उपजे प्रभु मेरे हिय में सुख।

अंखियां याद करे यह रोये, ेरो मत मुझसे प्रभु तुम मुख।

पूजा सदा करे तुम्हारी, न विसराये तुमको एक पल।

नैया मेरी पार लगाना, हम में ईश नहीं कोई बल।

जीवन कर्ज चुकाऊँ कैसे, अंधियारा है कुछ ना दीखे।

चल-चल कर मैं संभल न पाऊँ, मुझे संभालो तो पथ दीखे।

मन्दबुि) हूँ ज्ञान नहीं है, सर्जक मेरा आस तुही है।

बहते मेरे आंसू देखो, इस जग का कर्तार तुही है।

जियरा किन सुपनों को देखे, अंखियां रिमझिम-2 बरसे।

बसे न हिय में इस जीवन में, नहीं कभी यह जियरा हरषे।

रोते बीती सारी घड़ियां, कर कृपा तोहि पाऊँ सजना।

सुखदायक तुम अगम अगोचर, तू मेरे जीवन का सुपना।

रो-रो कर मैं तुझे पुकारुँ, करुँ श्रृंगार न कुछ भी जानूं।

देख रहा मैं शून्य गगन को, कितने तारे किसको मानू ?

सभी समर्पित ईश तुझे है, करुँ समर्पित साहस नाही।

*क्यों मुझमें मेरा मैं गूंजे, मुझे बचा लो मेरे माही।*47

सुपनों की दुनिया में जीते, कुछ भी हमको पता नहीं है।

तुमसे ना मिलना हो पाया, जीवन का तो दर्द यही है।

कैसे तुझे मिलूं हे भगवन, अन्धाकार में भटका हूँ।

गुनाह हुआ मुझसे ऐसा क्या, बिन तेरे मैं तड़ रहा हूँ।

मिलो मुझे जिय प्यास मिटाओ, मैं सेवक तुम ना ठुकराओ।

तेरे मन्दिर की चौखठ पर, जपूं तुझे तुम प्रीति बढ़ाओ।

झरते रहे नीर यह मेरे, भूलूं कभी न सांझ सवेरे।

जीवन के यह पल कट जायें, तुझे पुकारुँ तुम हरि प्यारे।

बहते नीर हमें तुम लख लो, हम है अबल-सबल तुम स्वामी।

डर लगता है रातें काली, जानो सबकी अन्तर्यामी।

जीवन का श्रृंगार तुही है, जीवन का आनन्द तुही है।

तेरी यादों में खो जायें, तुम संभाल लो सभी तुही है।

48

तेरे द्वार हम आये, प्रीति को बढ़ाओ।

भटके है इस जंगल में, कृपा हमें दिखाओ।

जीवन यह जा रहा है, तुम बिन रो रहा है।

प्यासे तेरे दरश के, घट में तू बसा है।

नयन में छवि तुम्हारी, मुझे मिलो मुरारी।

बन्शी की धुन सुना दो, डूब जाऊँ सारी।

खेवट बनो कन्हैया, पार कर दो नैया।

चहुँ ओर जल ही जल है, पाऊँ तुझे सैंया।

अपना तुम्ही बना लो, मुरझाया खिला दो।

तेरे ही गीत गायें, निज चरण बिठा दो।

बनना कभी ना निष्ठुर, कर कुछ भी न सकते।

*नैना मेरे बरसते, राह तेरी तकते।*49

नहीं मिलो ना मिलना चाहो, पर मेरे सुपनों में आओ।

रो-रो कर हम तुझे पुकारें, मेरे नैनन में बस जाओ।

सम्बल मेरा बस तू ही है, यादें तेरी मीठी लागे।

जग में ना हमको भटकावे, तुमको भूल हमें डर लागे।

पाप पुण्य सुख-दुख दुनिया में, पार करें कैसे ना जाने।

रो-रो कर बस तुझे पुकारें, आशा तू ही बस यह जाने।

मेरे जीवन की तुम सुगन्धा, बदरंग भूल तुमको दुनिया।

जिसके हिय में तुम बस जाओ, सब पाप कटे सुमरे जीया।

जग के कांटे ना उसे चुभें, बस गीत उठें गोविन्द हरे।

वह अर्पित कर हर सांस तुझे, इस भव सागर को पार करे।

शीश झुकाये द्वार खड़े हम, जीवन के मेरे तुम श्रृंगार।

आंखों से मोती ढलक रहे, सुन लो करते तेरी पुकार।

50

जग के सुख में मिले निराशा, फिर भी मनुआ यह भरमाता।

शाश्वत हरि से प्रीति बढ़ा ले, वह दुख भंजक है मुक्तिदाता।

सुख की चाहत में सब चलते, दुख के बादल फिर भी घिरते।

जो भी हरि को हृदय बसाता, पाप यहाँ पर उसके गिरते।

जपो उसे कुछ क्षण है बाकी, भूलो ना माया भरमाती।

आतम का श्रृंगार वही है, बिन जल मछली रह ना पाती।

हरि-हरि जपो यहाँ सुख पाओ, इस भव सागर से तर जाओ।

साथ न कोई अंतिम क्षण में, उसी हरी से हिया सजाओ।

शिशु जब रोवे किसे पुकारें, मां ही उसको दूधा पिलावे।

जाने नहीं मगर वह माता, कभी नहीं उसको विसरावे।

आंसू गिरें पुकारों उसको, वह ही जीवन का है दाता।

*सकल सृष्टि का वह है स्वामी, करो याद यह जीवन जाता।*51

हरि बिन कोई नहीं सहारा, जपो उसे काटे दुख सारा।

सागर की लहरों में बहते, जाने वह ही सृजन हारा।

सांस-सांस में उसे रमा ले, कर दे पथ आलोकित सारा।

बिन उसके मन चैन न पावे, भज गोविन्दम चमके तारा।

उसे पुकारो वह ही खेवट, अपने दिल की ज्योति जला लो।

जाओ भूल न इस मेले में, नैनन अपने हरी बसा लो।

कठिन डगर पथ में अँधियारा, हरि बिन कृपा न हो उजियारा।

नीर बहायें नयना हरपल, हरि बिन कृपा न हो उजियारा।

कर न कृपा से हमको वंचित, अज्ञानी हम तेरे बालक।

तुझे पुकारे रो-रो कर बस, सुधि लो मेरे जीवन सर्जक।

द्वार पड़े है आंखे खोलो, मेरे मालिक कुछ तो बोलो।

देख रही अंखियां पथ तेरा, अबल प्रभु हम तुम नहीं तोलो।

52

दूर करो दुख मेरे सारे, अब हरि मेरी स्तुति को सुन लो।

अज्ञानी हम राह न जाने, अपनी शरणा में प्रभु रख लो।

अँधियारा है भटके यह मन,मछली जैसे तड़े जल बिन।

रोवे अंखियां तुझे पुकारे, रहा नही जाता तेरे बिन।

आंसू को स्वीकार करो प्रभु, कुछ भी मेरे पास नहीं है

सूख रही यह बंजर धारती,प्यासे हम बरसात नहीं है।

यह दीपक आशा का कंपता, सारे जग के तुम संचालक।

जियरा मेरा भर-भर आता, कृपा करो तुम दुख भंजक।

थाम मुझे लो भटक रहे है, तेरे बिन हम तड़ रहे हैं।

क्या कुछ कहें न कुछ भी सूझे, बस हम तो प्रभु सिसक रहे हैं।

द्वार शीश हम रख कर रो ले, झरे नीर फिर उसमें बह ले।

*सब सन्ताप डुबो दे उसमें, लाज हमारी प्रभु तू रख ले।*53

याद तुम्हारी आ रही, जोड़ न पाता मैं नाता।

इस जगत में मैं भटकता, आंख से है नीर गिरता।

अब मुझे तू थाम पालक, सहे जाते अब नहीं दुख।

तुम लगा दो पार नौका, कर कृपा होवे हमें सुख।

दास ईश मैं तुम्हारा, कर नहीं सेवा से वंचित।

तेरे चरणों में रह ले, पल गुजरे दुख ना किंचित।

रो कर तुझे हम पुकारे, छिप गये तुम कहाँ छैला?

बेबसी देखो हमारी, कुछ ना जाने मन मैला।

एक तेरा ही सहारा, टूटे न दिल यह डरे है।

लगा दे तू पार नैया, अंधोरा ना दीखता है।

प्राण मेरे यह भटकते, छिप गये तुम छोड़ मुझको।

सूनी आंखों में आ जा, भूलूँ मैं सारे गम को।

54

मुझको दे दो ईश्वर तुम पथ, बीते फिर यह शाम सुहानी।

तुमको सुमरुँ मैं सुख पाऊँ, पूर्ण होवे मेरी कहानी।

करुँ अर्चना हरपल तेरी, मनुआ तेरी राह निहारे।

जग की प्रीति भई सब केरी, करुँ विनय मोहि ना विसारे।

हृदय बसाऊँ मैं सुख पाऊँ, जनम-जनम की पीड़ मिटाऊँ।

मेरे देव न मुझसे रुठो, आंसू के मैं सुमन चढ़ाऊँ।

अंधियारी रातों में प्रभु जी, तू ही मेरा एक सहारा।

पार लगा दो मेरी नौका, अबल जान तू सृजनहारा।

तुझे सुनाऊँ अपनी पीड़ा, नहीं और सुनने को कोई।

अपने-अपने सुपने सबके, बिन हरि कृपा नहीं सुख होई।

बस जाओ इस दिल के अन्दर, तेरी सूरत सदा निहारुँ।

*मृगमरीचिका से हम छूटे, कुछ पल बाकी तुमको सुमरुँ।*55

बीत रहे पल मन तुम देखो, कल की चिन्ता क्या करता है ?

सुख दुख के सब खेल-खेल ले, आगे अपनी ना चलनी हैं।

ईश्वर हृदय बसा चलता जा, दे दुख ना उससे बचता जा।

लीला प्रभु की यहाँ खेलती, पार तर्क से तू जपता जा।

रो-रो उसे पुकारो माँ है, सुनने को न और कोई है।

दो पल का सब साथ यहाँ है, दुख में जाते छोड़ सभी है।

यहाँ विवशता हरपल रोती, सूखे नहीं आंख के मोती।

अंधियारे में उसे पुकारों, उससे मिलती जीवन ज्योति।

नमन करो प्रभु के चरणों में, वही दिखायेगा तुमको पथ।

टूटा यदि विश्वास ईश का, दुख में डूबेगा जीवन रथ।

कर विश्वास ईश गुण गा ले, जगकर्ता है वही संभाले।

छूटे मैं सब हरि की लीला, लहरावे हर कदम संभाले।

हारे को हरिनाम यहाँ है, जीवन का आनन्द छिपा है।

ना ले पाया रस जो जग में, घट बरसे रस यहाँ छिपा है।

बहती जाती है यह नदिया, कूल नजर ना आता कोई।

जपो हरि को वही संभाले, अपना सर्जक जानो सोई।

राजा रंक जा रहे सारे, यह तो दो पल का मेला है।

जिसके दिल में हरी बसे हों, ना होता फिर मन मैला है।

किससे यहाँ शिकायत करनी, सागर ले जाता लहरों को।

नीर गिरें जो इन अंखियों से, अर्धा चढ़ा दे उस कर्ता को।

ज्ञान धयान सब उसकी लीला, उस सम्मुख तू शीश नवा दे।

मैं को करो विसर्जित हरपल, महके वह ही सुरति जगा दे।

रोवे जिवड़ा उसे पुकारो, विरह उसी का तन-मन बारो।

*बहती अपनी धुन में नदिया, कितना सोंचो और विचारो।*57

प्रभु जी इतनी तो तू सुन ले, अपना विरह मुझे तू दे दे।

डूबूं तुझमें बस खो जाऊँ, दर्शन चाहें मुझे नहीं दे।

तेरी चौखठ पर गिर रो ले, बिना प्रीति हम हुए अभागे।

बढ़े प्रीति तू हमें बहा ले, पथ है कठिन हमें डर लागे।

थकता जाता कूल न पाता, बिना ज्ञान जिय तम में जाता।

पार लगा दो मेरी नौका, तुझे भूल मैं दुख को पाता।

जग के पालक जाने कुछ ना, करो माफ हम तेरे बालक।

मुख को ना तुम हमसे ेरो, तुम हो मेरे जीवन सर्जक।

सांस-सांस में तुमको सुमरे, ज्योति प्रेम की हिया जलावे।

मुझको तू दे इतना तो वर, जग मरीचिका नहीं सतावे।

समझ न आवे देखूँ लीला, मनुआ भटक-भटक यह जावे।

कृपा करो तुम मेरे स्वामी, रज चरणों की तेरी पावें।

58

ईश पथ हमको दिखाना, हम भटकते ना रुलाना।

समर्पित हो तुझ चरण में, बीत जाये यह ंसाना।

कोरी आंखों में तम की, कालिमा क्यों चढ़ गई है।

तुझे प्रभु मैंने भुलाया, जिन्दगी यह रो रही है।

वासना के चक्र में ंस, ना उठे हम कमल बन कर।

रो रहे क्षण-क्षण यहाँ पर, कौन ऐसी प्यास लेकर ?

अश्रु को स्वीकार कर लो, प्यार का तुम दान दे दो।

ईश तेरे हम भिखारी, तुम मेरा उ)ार कर दो।

आदि अन्त समग्र तू ही, जिन्दगी की ज्योति तू ही।

क्यों बने कातर बता दो, लाज रख ले यह विनय ही।

प्यार का मैं दीप लेकर, चलता जाऊँ न रुकूँ मै।

जपूँ हरपल मैं तुझे, याद में तेरी मिटूँ मैं। 59

तेरी चौखट पर आये, चाह हमको ना हटाये।

रंग अनेको इस जगत में, रंग तेरा उतर न पाये।

अबल हम पथ यह कठिन है, तेरे बिन नाहिं कुशल है।

थक गये हम भटकते हैं, कर कृपा तू तो सबल है।

विवश हम तो चल रहे हैं, जाने न अनजान रस्ता।

बीत जाये यह रूर प्रभु, याद करुँ तुमको रोता।

इस जग के तुम्ही स्वामी, नाचें कठपुतली बनकर।

दुख के दरिया में डुबो न, सुन हमारी तू दया कर।

तुम प्रभु ना मुझसे रुठो, नीर मेरे बहे देखो।

एक सहारा प्रभु तेरा, ढलती संधया देखो।

द्वार तेरे आ गये हैं, न हटाना मेरे माली।

तुम कृपा बिन भक्ति दुर्लभ, दूर न कर मुझसे लाली।

60

चरणों में तू बसा मुझे, लगता नहीं है दिल यहाँ।

अँधियारा पथ ना दीखे, जाऊँ बता दे मैं कहाँ ?

सृष्टि को तू नचा रहा, हम रो रहे हैं याद कर।

दया कर तू अबल हम है, ना रुठ मुझसे वंशीधार।

विवश देखों हम यहाँ हैं, रुठे ना चल पायेंगे।

दया हमको मिले तेरी, तो ही हम लहरायेंगे।

गीत प्रभु जी यह नहीं है, मैं दर्द अपना कह रहा।

विरह तेरा दिल बसा है, जन्मों से मैं भटक रहा।

झोली लिये मैं खड़ा हूँ, खुशी के मोती डाल दे।

नयनों में आ जाओ प्रभु, पल यादों में गुजार दें।

तुम शक्ति पुंज ज्ञानपुंज, इस जगत के आधाार हो।

नयनों से नीर बह रहे, कर्तार तुम ही ईश हो।

61

डूबी जाये यह गगरी, कैसे भेजूँ मैं पाती।

बुझता दीपक मेरे प्रभु, तू जला ज्ञान की बाती।

तू रचैया जगत का है, पार तेरा न कोई भी।

डूबते मझधाार में हैं, प्रभु संभालो तुम हमें भी।

हम करते पूजा तेरी, हृदय में तुमको बसाये।

चल रही यह सांस जब तक, कर कृपा ना भूल पायें।

अबल हम हैं तुम सबल हो, पार नौका को लगा दो।

सूखा रस जीवन तुम बिन, धुन सुना रस को बहा दो।

कण-कण में व्याप्त तू है, सब तरु है बोलबाला।

बह रहे हिर नीर यह क्यों, कर क्षमा तो हो उजाला।

विरह में पागल हुआ मैं, चाह सुधा मैं भूल जाऊँ।

नीर ले जाये उसी पथ, जहाँ तेरे चरण पाऊँ।

62

कितने रुप धारो गोविन्दा, मैं चकोर तुम प्रभु हो चन्दा।

तुमको रटे जिया यह हरपल, काटो मेरे दुख के न्दा।

सारे जग में राज्य तेरा, सबका तू ही पालन हारा।

याद तुझे कर जिवड़ा रोवे, पार लगा दो प्रभु मैं हारा।

नीर बहें पथ तेरा ढूंढे, अँधियारा है ज्योति जला दो।

मिट जाये जीवन का क्रन्दन, अपने मन्दिर मुझे बसा दो।

करुँ अर्चना हरपल तेरी, जपूँ सदा तेरी ही माला।
हिचकोले खाती यह नौका, पार लगा दो मेरे लाला।

दास तुम्हारा अज्ञानी हूँ, तुम सा ना कोई भी दानी।

अँखियां राह निहारे तेरी, प्यासा मनुआ दे दे पानी।

इस सागर में भटक रहे हम, ओर न छोर दीखता कोई।

*क्षमा कर दे मेरे देवता, याद तुझे कर अँखियां रोई।*63

अपना-अपना भाग्य यहाँ हैं, सुख-दुख के सब खेल खेलते।

इच्छाओं के विवश हुए हम, सारा जीवन युहीं भटकते।

बिन हरि कृपा न हो कल्याणा, जपो वही है तारनहारा।

शिशु रोता आवाज लगाये, जाने सब वह पालनहारा।

लीला सब उसकी ही जग में, देखो इसको प्रभु गुण गाओ।

सांस-सांस में रटो उसे तुम, उससे ही बस प्रीति बढ़ाओ।

सुख-दुख है दुनिया का मेला, धूप छांव का सब है खेला।

मगन रहे जो हरी भजन में, कभी न होवे मन फिर मैला।

सुरति सदा उसमें ही राखे, कारज करे न हरि विसरावे।

जान यहाँ दो पल का जीवन, अहंकार को दूर भगावे।
नहीं खुशी से आना-जाना, फिर भी मनुआ है दीवाना।

लाज रखो हे जग के कर्ता, सद्मार्ग पर तू ही चलाना।

64

चल मन तू उस पार गगन के, छिपे हुए साजन इस मन के।

रुप न देखा यादें फिर भी, हमें रुलाये जी भर-भर के।

जग की बतियां रास न आवे, ढूंढू पथ तेरा ना पायें।

कर दे दया दया के सागर, तुझ चरणों में नीर चढ़ायें।

जिवड़ा रोवे तुझे न पावे, कैसे इस मन को समझावे ?

बेदर्दी तुम बनों न ईश्वर, वर दो तुझ मन्दिर तक आवे।

जिवड़ा डोले तुझे पुकारें, मुझको जीवन देने वाले।

मेरे मन की पीड़ा सुन लो, बहते आंसू के हैं नाले।

जनम-जनम का प्यासा मनुआ, भजूँ तुझे लागे ना जीया।

लाज मेरी हाथ तुम्हारे, मुझे थाम लो मेरे पीया।

मफ मुझे कर अज्ञानी हूँ, कब आयेगी मेरी बारी।

*शीश झुकाये द्वार खड़ा हूँ, पथ देखते नीर तुम्हारी।*65

जपे हम बस नाम तेरा, सांस यह जब तक चले।

डगर यह अनजान मेरी, ना पता कैसे मिले।

तुझ कृपा की डोर ही प्रभु, मिले तो हम पार हों।

नयन तेरी राह देखे, तुम हमारे प्राण हो।

बहते आंसू को देखो, पास में कुछ भी नहीं।

दे रहा हूँ पीड़ अपनी, बस हमारे कुछ नहीं।

लाज मेरी राखना प्रभु, नीर को पहचानना।

जग में इनका मोल न हैं, तू न मुख को मोड़ना।

सृष्टि का तू ईश मालिक, खेल अंपरम्पार है।

नमन को स्वीकार कर लो, जगत का आधाार है।

किसी जगह गिर जायेंगे, चल रहा ना जानता।

न खा प्रभु मुझसे होना, प्यार तेरा मांगता।

66

मेरे भगवन आओ तुम, क्यों मुझे तड़ा रहे।

क्या मिलेगा बता तुमको, नीर अंखियों से बहे।

अनजान मग रोवे जिया, तू बता किससे कहें।

चाहते तेरी कृपा को, ना विलग तुमसे रहें।

समझ छोटी है हमारी, स्वामी सारे जग के।

तू लगा दे पार नौका, दुख मिटे सब हृदय के।

जलते रहे हम विरह में, एक पल भूलें नहीं।

नयनों से गिरता यह जल, कभी प्रभु भटकें नहीं।

स्वप्न कितने हम संजोते, टूटते हम बिलखते।
खेल छाया धूप का है, अज्ञान में हम भटकते।

तुझे हम कैसे मनाये, विधि नहीं हम जानते।

*खड़े बस हम सिर झुकायें, तुम्हें हम पुकारतें।*67

प्रभु कहाँ जायें बता हम, दिल नहीं लगता यहाँ।

दर्द तूने जो दिया है, क्या बुझेगा ना यहाँ।

चले आये स्वप्न नगरी, दिल हमारा तड़पता।

देव मेरे तुम न रुठो, क्या कहें दिल झिझकता।

चाह तेरे प्यार की है, शीश चरणों में धारा।

तप रही जो जिन्दगी है, कुछ मिले ठंडक जरा।

नयन रोते देखते है, कुछ हमारे बस नहीं।

हरि तुम मुझको संभालो, जाते क्षण रुके नहीं।

ठोकरें खाते जगत की, तू छिपा प्रभु हैं कहाँ ?

कृपा तेरी यदि मिले तो, बरसता सावन यहाँ।

काट बन्धान कर क्षमा, मेरी सुन पुकार को।

नीर अंखियों से बहे हैं, देखते हम शून्य को।

68

हरि तुम बिन मैं चैन न पाऊँ, तू कुछ कह दे तो कह पाऊँ।

वसो हिय मोहि नाहिं विसारो, चरण पडू मैं तुझे मनाऊँ।

थके हारे चले ना मेरी, कैसी यह कर्मों की डोरी।

जगा विरह मैं पाऊँ तुमको, राखो लाज ईश तुम मेरी।

जाये कहाँ तू ही बता दे, लगता नहीं यहाँ मेरा मन।

रो-रो सूखे नयना आंसू, सता रहा तू क्यों मनमोहन।

घुटते हम पर जान न जाती, कहाँ लिखूँ मैं तुमको पाती।

किस दुनिया में प्रभु तू खोया, देखो मेरी अँखियां रोती।

थके यहाँ हम चलते-चलते, पता ना हम कहाँ जायेंगे ?

साथ चाहता ढूंढू तुमको, बिन तेरे ना तर पायेंगे।

मकड़जाल यह है सब दुनिया, ;से यहाँ ;िर हम रोते है।

मुझे संभालो तुम मेरे हरि, याद तुझे कर हम रोते है। 69

हरि मुझको तुम पार लगाओ, मेरे मन की प्यास बुझाओ।

तरस रही यह मेरी अँखियां, मेरे खेवट तुम आ जाओ।

यादें तेरी जब-जब आवे, अँखियां झर-झर नीर गिरावें।

मेरे मन मोहन मत रुठो, तुझ चरणों की आस लगावे।

तेरी महिमा ;षि मुनि गाते, धयान धारे हिय में सुख पाते।

दूर करो तम हम अज्ञानी, धयान धारे हिय में सुख पाते।

तेरी यादों में बीते पल, रम जाओ मेरी सांसों में।

अगम अगोचर पार न तेरा, भय लागे काली रातों में।

ज्ञान पुंज तुम दीप जला दो, अँधियारा सब दूर भगा दो।

करें अर्चना प्रभु हम तेरी, इस जीवन को प्रभु महका दो।

शुभ कर्मों में सदा रहे प्रभु, हम है अबल विनय करते है।

लाज रखो हे ईश हमारी, तुमसे ही जीवन पाते है।

70

श्री हरी मुझको संभालो, बोझ अब उठता नहीं।

डोले मनुआ यह चहुँ दिश, चैन पर मिलता नहीं।

तेरी दुनिया में खिलते, नीर अंखियों से झड़े।

देखो लुटती यह दुनिया, तुम शरण हम आ पड़े।

तेरे इंगित पर जगत है, पीड़ सागर का बहे।

समझ सकते हैं न लीला, तेरे चरण को चहें।

ज्ञान के तुम दीप हो प्रभु, अज्ञान को तुम हरना।

नयन से आंसू बरसते, प्रभु हमें क्षमा करना।

रंग कितने ही जगत में, रास आता कुछ नहीं।

तुम वसो प्रभु यदि नयन में, रंग बरसता फिर यहीं।

चरणों की रज को दे दो, नमन स्वीकार कर लो।

*ईश तेरे दास हैं हम, विनय यह लाज रख लो।*71

द्वारे तेरे आये प्रभु जी, अपनी शरण हमें तुम रख लो।

जनम-मरण का चक्र चल रहा, सुधि को मेरी प्रभु तुम ले लो।

आंखे नीर गिरायें हरपल, कब आओगे मेरे प्रियतम।

जिवड़ा बिलखे दर्द न देखे, तुझे पुकारुँ हार गये हम।

चरण धूलि भी हमें मिली ना, बीता जाता सारा जीवन।

इतने निष्ठुर बने प्रभु क्यों, लख लो दिल करता है क्रन्दन।

सांस-सांस में तुम रम जाओ, जग में नही मुझे भटकाओ।

चाहे मुझे रुलाओ कितना, पर मेरे सुपनों में आओ।

जाते पल बस विरह सुहावे, और नहिं मोहि कुछ भी भावे।

करुँ अर्चना हे हरि तेरी, तू ना मुझको दूर भगावे।

ज्ञानी नहीं विधी ना जानूं, केवल बस मैं रोना जानूँ।

तू अज्ञात छिपी ओ माता, दूधा मिले इतना ही जानूं।

72

तुमसे मिलन होगा कभी, यह जानते हम प्रभु नहीं।

बस याद में तेरी मिटें, गम फिर हमें होगा नहीं।

तू ही सर्जक प्रभु मेरा, नीर हम किसको दिखायें।

तेरी दया को चाहते, कर जगत हम पार जाये।

आंसू बरसते हैं यहाँ, ना तूल कोई दीखता।

हे देव तुम रुठो नहीं, तम में यहाँ मैं भटकता।

ले चल खिवैया तू मुझे, यह नाव डगमग डोलती।

अर्चना तेरी करें हम, यह सुरति तुझे पुकारती।

द्वार तेरे बैठ कर हम, करते रहें बस आरती।

ईश तुम मेरी सुन अब, रज तुझ चरण मैं चाहती।

ज्ञानपुंज कृपा करो तुम, प्रज्वलित दीपक को करो।
सब शोक भय से मुक्त हों, जीवन सफल मेरा करो। 73

हरि दुखड़े सब दूर करो अब, रोये मनुआ कृपा करो अब।

अगम अगोचर जग के स्वामी, विनय हमारी ईश सुनो अब।

एक सहारा तू ही जग में, बस जाओ हरि मेरे घट में।

रो-रो अंखियां हार गई है, रुठो ना हरि इस जंगल में।

ज्ञान दीप प्रभु हृदय जलाओ, तुम्ही मेरे जीवन सर्जक।

खड़े हम तो तुझ सम्मुख, दया करो हम तो है बालक।

तुझे मनायें जिय सुख पाये, बढ़े प्रीति तुमसे वर पाये।

ले चल मेरे नाविक नौका, तुम बिन मेरा जिय घबराये।

दास तेरे हमें ना भूलो, तुम बिन कृपा विरह ना पावे।

मुझे बहा दे इस नदियां में, हाथ जोड़ तेरे गुन गावें।

अश्रु करो स्वीकार हमारे, नहीं पास है मेरे कुछ भी।

करते नयन प्रतीक्षा तेरी, मिट जाये चाहें यह तन भी।

74

बहते आंखो से आसूं, डूबता यह दिल गमें।

द्वार तेरे आ रहे है, हरि संभालो तुम हमें।

डगर है अनजान जग की, हम अंधोरे में गिरे।

लाज मेरी ईश रखना, चरण हम तेरे गिरे।

पार करो मेरी नैया, बिन खिवैया डूबती।

नयन पथ तेरा निहारें, राह तेरी जोहती।

बिन दया खिलता न उपवन, जगत के आधाार हो।

;षी मुनि सब धयान करते, सब सुखों की खान हो।

यह उमर सब काट देंगे, प्यार तेरा चाहते।

रुठ हमसे तुम न जाना, नीर मेरे निकलते।

सूखा यह जाता उपवन, देखता मेघ बरसे।

*ना सजा ऐसी हमें दो, तुम बिना जीव तरसे।*75

जीवन में कितने सुमन खिले, पर तरस गये हम खशबू को।

कितने ही हमने छन्द रचे, सब तोड़ चले वह बन्धान को।

अज्ञात दिशा सूना है पथ, ना जाने कित जायेगा रथ।

खोई-खोई अंखियां खोजें, कैसे पाऊँ मैं अपना पथ।

हे ईश हमें तुम बल देना, ना तुझे भूल चलते जायें।

आंसू की बहती गंगा में, हम बहे मगर तुमको पायें।

निर्बल है जान क्षमा करना, बहते आंसू को लख लेना।

तेरे दर बिन न ठौर कोई, दे-दो मुझको बस इक कोना।

हर लहर यहाँ बढ़ती जाती, पल भर को मिले बिछुड़ जाती।

हम भूल चले हैं संग तेरा, यह आंखियां रोवे दिन राती।

कितने ही जन्मों में भटके, निकले आंसू इन नयनों के।

तेरी करुणा को चाहे हम, जग के कर्ता पालक सब के।

76

जीव रोये विरह है जागा, तुम बिन नैना झर-झर बरसे।

पांव पड़ू भूलो ना प्यारे, मिले कृपा तो छूटे दुख से।

हरि-हरि गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ, कुछ ना दीखे नीर चढ़ाऊँ।

सारे जग के तुम रखवाले, आशा बन्शी धुन सुन पाऊँ।

ले चल मेरी नैया खेवट, तम में भटकूँ दीप जला दे।

अपनी शरणा हार गया ले, मन यह रोये तू हर्षा दे।

अगम अगोचर पार न तेरा, दया मिले तो होय सबेरा।

इन प्राणों के तुम हो स्वामी, ढूंढे आंखियां प्रियतम मेरा।

मेरे माली खाली थाली, डरपे मनुआ रुठी लाली।

नहीं किनारा मुझको दीखे, पार करो राते हैं काली।

मिट जायें तेरी यादों में, जग में सुन्दर है बस यह पल।

मेरी सांसों में रम जाओ, ना जाने प्रभु होगा क्या कल। 77

द्वारे तेरे नाथ खड़े हैं, मुझे सम्भालो मेरे राम।

तेरे विरह में हम तड़पते, बीत ना जाये काली शाम।

जग के सब सुख तुम बिन ीके, रोवे नैना हम तो भटके।

कृपा नाथ तेरी हो जाये, तुमको पायें हम ना अटकें।

व्याकुल मनुआ तुझे पुकारें, प्यासा आशा तू कब बरसे।

मेरे देवता तुम ना रुठो, लख ले हमको जीया हरषे।

नैना मेरे झड़ी लगाये, जिय चाहता हरदम नहाये।

वर दे दे प्रभु हमको ऐसा, पल भर विलग नहीं हो पाये।

नाथ मेरे तुम दास तेरे, इस सारे जग के पालक हो।

भाग्यहीन ना करो हमें तुम, मेरे जीवन के सर्जक हो।

आलोकित प्रभु पथ को करना, बढ़े प्रेम नित मेरे अंगना।

तेरे ही प्रभु गुन को गायें, बीता जाये जीवन सुपना।

78

ज्ञान का सूरज दिखा दो, तिमिर के बादल हटा दो।

हम प्रभु जी तेरे बालक, तुम दया का दान दे दो।

फिर रहें हैं हम भटकते, नीर आंखों से बहे हैं।

तेरा सहारा यदि मिले, ूल दिल के फिर खिले हैं।

तेरे चमन के ूल हैं, चाहते हैं प्यार तेरा।

निज चरण में प्रभु बिठाना, दुख कटें फिर हो सबेरा।

नयन रोये तुम न आये, नहीं जीवन गुनगुनाये।

कर कृपा हम पर दयालू, शूल जग के तू मिटाये।

सब जगह पर तू छिपा है, आस तू है प्यास तू है।

नयन तुमको खोजते हैं, बसता कण-कण में तू है।

चरण में तेरे पडे हम, लाज मेरी राख लेना।

*क्या कहें तुमको रचैया, अबल मैं तुम थाम लेना।*79

जानते हम ना प्रयोजन, निष्प्रयोजन बह रहे है।

दन्श लगते चीख उठती, शून्य में सुर खो रहे हैं।

ढूंढती है आंख उनको, बाट मेरा दर्द लेता।

सोचता एकान्त में फिर, हाय मैं क्यों दर्द देता।

पल दो पल का है मेला, अनगिनत तूंा यहाँ हैं।

चहुँ दिशा में आंख उठती, भ्रम कितने पल रहे हैं।

दिल भरा शिकवे यहाँ हैं, रो रहे जाता नहीं गम।

ूल खिलते इस चमन में, पा सके खुशियां नहीं हम।

इस जगत को प्यार मेरा, बहता नयनों से झरना।

विवश हम कुछ कर न पाते, इस खता को मफ करना।

प्रभु तू सबका है स्वामी, तू दुख सभी के पोंछना।

शीश मेरा यह झुका है, वन्दगी स्वीकार करना।

80

तुम बनो निर्मोही न प्रभु, अबल हम हैं तुम सबल हो।

अश्रु तेरे चरण धोवें, जिन्दगी के प्राण तुम हो।

स्वामी तुम हो हम सेवक, तुम बचाओ रात काली।

ज्ञान का दीपक जला दो, मैं भटकूं मेरे माली।

निज चरण में तुम बिठा लो, प्रभु स्वरों को गीत दे दो।

डूबी जाती है गगरी, इक झलक का दान दे दो।

कर्म शुभ हमसे सदा हों, प्यार इस दिल में भरा हो।

सांस जप तेरा करें प्रभु, नाहिं पल भर को जुदा हो।

जीव में तू ही धाड़कता, हाय मैं तुमको तड़ता।

कर्म की यह डोर कैसी, रो रहा तुमको तरसता।
द्वार तेरे हम भिखारी, प्यार दे दे मेरे माली।

अश्रु को स्वीकार कर लो, जाये ना झोली खाली। 81

जीवन की अन्तिम मंजिल तू, फिर भी तुझे भूलते हम क्यों ?

जग की भूल भूलैया में ;ंस, हरदम हम रोते रहते क्यों ?

हमें न भटकाओ ओ मांझी, दीप जला दे रातें काली।

अंधियारा है कुछ न दीखे, ूल तुम्हारें स्वामी माली।

;षी मुनी सब धयान लगाते, जाम तेरा पी ना अघाते।

खो जाऊँ तेरी यादों में, चाह यही तुझसे वर पाते।

तेरे पथ चल कर गिर जाऊँ, निर्बल हूँ मैं संभल न पाऊँ।

करुणाकर तुम मुझे संभालो, बार-बार बस यह दुहराऊँ।

झर-झर नीर गिर रहे मेरे, रोते प्राण तुझे ही टेरे।

सकल सृष्टि के तुम हो मालिक, आओगे कब सांझ सबेरे।

तेरी करुणा के भूखे हम, प्राण हमारे तड़फ रहे है।

संकट से तुम हमें उबारो, देखो नैना बरस रहे है।

82

जीवन को प्रभु देने बाले, चरण पड़ता मैं तुम्हारे।

संकट मोचन नाम तुम्हारा, तू ही दुख दरिया से तारे।

तुझे खोजते हम खो जायें, इन आंखों में आंसू आये।

विरह आग बढ़ती ही जाये, राख उड़े गीतों को गाये।

हरि तुम मेरी सुधि को ले लो, बालक अबल नहीं जाने पथ।

अंधियारे में भटक रहे हैं, दिशाहीन न कर मेरा रथ।

सुनूं तुम्हारी वंशी धुन को, कभी न भूलूँ मैं इक पल को।

दीवानी थी पागल मीरा, मैं पागल खोजूँ उस क्षण को।

नीर बह रहे जाने ना कुछ, डूबा जाता है यह दिल रब।

जलधा बीच बस बने लहर हम, हरपल तुझे भजें मेरे रब।

इन नयनों में तुम बस जाओ, मेरी सांसों में रम जाओ।

*विनय यही तुमसे वर मागूँ, ना मुझसे तुम जिया चुराओ।*83

पड़ते राम शरण तेरी हम, अज्ञानी तेरे बालक हैं।

अंधाकार में भटक रहे हैं, कांटों से प्रभु हम घायल है।

ईश ज्ञान का दीप जला दो, प्रेम बढ़े संताप मिटा दो।

नीर चरण तेरे ही धोवें, मुझको ना भूलो छैंया दो।

चल-चल गिरें अबल प्रभु जानो, कसक कलेजे की तुम जानो।

उड़ा-उड़ा यह जिवड़ा जाये, दास बना लो अब तो मानो।

बीत रही जीवन की घड़ियां, तुम बिन मिले न जाये जियरा।

सृष्टि सकल तेरे गुन गाती, आन मिलो अब मेरे पीया।

करें अर्चना विधाी न जाने, गिरतें आंसू राह निहारें।

देव मेरे मुझसे न रुठो, कृपा करो तो जीवन संवरे।

प्रभु जीवन के तुम बसन्त हो, कोयल गाती है तुम बिन ना।

द्वार पड़े तेरे अपना लो, कुछ भी बल प्रभु जी मुझ में ना।

84

हरि बिन मेरा नहीं सहारा, ठोकर खा खा कर मैं हारा।

सकल जगत के तुम हो स्वामी, शीश झुकावे सब दरबारा।

जीवन की तुम ही सुगन्धा हो, बिन तेरे जीवन बेकारा।

तुमको ;षि मुनि हरपल भजते, छूटें दुख से इस संसारा।

ज्योति जला दो पार लगा दो, डूंबू नहीं दास तुम्हारा।

बहते इन आँसू को देखो, तू ही जीवन का आधाारा।

मात-पिता गुरू स्वामी सखा, रूठ न जाना तू जीवन धान।

हरपल तेरी करे अर्चना, बसो ईश तुम मेरे नैनन।

जग वैभव नहीं रास आवें, चाहूँ अपने चरण लगावे।

नीर गिरें पग तेरे धाोंवे, कह न सकूं कुछ तुझे मनावें।

कृपा सिन्धाु अंखियां यह रोवें, तुझे कहो कैसे हम पावे।

हम अज्ञानी रोना जाने, शरण पड़े पल बीते जावें। 85

सकल जग का तू मही है, पा सके तुमको नहीं है।

अर्चना स्वीकार कर लो, हम भटकते फिर रहे हैं।

नयन में आंसू हमारे, चल न पाये बिन सहारे।

जान लो हम तो अबल हैं, मेरी नैया को तारे।

स्वार्थ का मेला यहाँ है, जाने न जाना कहाँ है ?

डगर है अनजान मेरी, देव मेरे तू कहाँ है ?

अश्रु को स्वीकार कर लो, प्रेम का तुम दान दे दो।

बालक हम तो तुम्हारे, ज्ञान का दीपक जला दो।

प्यास तेरी उर जगी है, नयन में लागी झड़ी है।

समर्पित हो बहा जाऊँ, कर कृपा सब कुछ तुही है।

विरह तेरे डूब जाऊँ, सब दुखों के पार जाऊँ।

नयनों में छवि हो तेरी, तुझ चरण मैं नाथ पाऊँ।

86

जलता रहा सदा जीवन भर, फिर भी तुझे नहीं मैं पाया।

नीर नहीं नयनों के सूखे, रूठ गया मेरा भी साया।

भांति-भांति के खेल खिलाता, मनुआ जग में है भरमाता।

कटीं पंतग सा बढ़ता जाऊं, मुझे संभालो भाग्य विधााता।

एक बार नयनों से लख लो, नीर गिरें पग धाो लेने दो।

कहां गिरें खो जायें कब हम, द्वारे तेरे आऊं वर दो।

कैसे तुझे मनायें प्रियतम, विधिा से रहे सदा हम वंचित।

सूखी धारती ?टता यह दिल, बरस जाओ अब कर दो सिंचित।

कितना दर्द बिखेरा तूने, ले न परीक्षा टूटे सुपने।

पार लगा दे मेरी नौका, रूठ गये मेरे सब अपने।

बहते नीर कांपते यह पग, उर मेरा होता है संशित।

मुझे न भूलो मेरे स्वामी, चाहूं तुमको करो न वंचित। है, बहती आंखे यह नम है।

सृष्टि का तू ही रचियता, ?िर भी क्यों इतना गम है ?

तू बता प्रभु क्या करें हम, चरण में तेरे पड़े हैं।

वासना के चक्र में ?ंस, दूर हम तुमसे हुए हैं।

अबल हम तुम साथ दे दो, करो कृपा आंसू देखो।

कैसी कर्मों की डोरी, रोते नयन तुम न देखो।

जल बिना यह कंठ प्यासा, तड़पे क्या जायेंगे हम।

तुम क्षमा का दान दे दो, गीतों को गायेंगे हम।

जिन्दगी के गान मेरे, सुप्त होते जा रहे हैं।

तुम छिपे बैठे कहां हो, प्राण मेरे रो रहे हैं।

ना चला जाता खिवैया, पार करो मेरी नैया।

अश्रु को स्वीकार कर लो, भीख यह दे दे रचैया।

88

हरि-हरि भजें शरण हम तेरी, काटो जनम-जनम की ?ेरी।

दुःख के बादल सब हट जायें, नयना रोयें जग से हारी।

चरण पड़ू मुझको तुम लख लो, बीती सदियाँ अब सुधि ले लो।

विनती कर कर हार गई मैं, मेरे मोहन मुझे न भूलो।

जग हैं हंसता पीड़ न लखता, कसक कलेजे को तड़ाती।

किससे कहूं बात न बूझे, काली रातें हमें डराती।

सुन ले मेरी तेरा सेवक, तू ही मेरा जीवन दाता।

दु:ख से मेरे जी न चुरावे, तू ही मेरा भाग्य विधाता।

तड़ू तरस नहीं क्यों आवे, बतला कैसे मन समझावें?

गिरती बूंद धारा यह पीवे, हम अज्ञानी कित को जावें?

द्वारे पड़े नाथ तुम्हारे, पायें कैसे ना जाने हैं।

*करूणा के सागर हो तुम प्रभु, झोली खाली लिये खड़े हैं।*89

कण-कण उतारे आरती, कुछ हमारे बस नहीं।

नाम को जपते रहेंगे, तुम बिना कुछ भी नहीं।

;षि मुनी ज्ञानी यहां सब, अर्चना तेरी करें।

दु:ख में सब तू सहारा, नाम लेकर ही तरें।

साथ तन भी छोड़ देगा, एक वह सतनाम है।

पार यह ही लगायेगा, साथ रख यह नाम है।

राम जप ले राम भज ले, और क्या चाहत करें।

कुछ यहां पल शेष बाकी, नीर आंखियों से झरे।

नाव मेरी का खिवैया, छोड़ तू दामन नहीं

बिन कृपा ना साथ कोई, सत्य जीवन का यहीं

राज उसका ही यहां है, लहर बन हम बह रहे।

जान ले हम जलधा को बस, फिर न कोई गम रहे।

लाज रखो मेरी गिरधारी, चरणा तेरे पड़े मुरारी।

जगकर्ता तुम इसके पालक, खोजें अंखियां मैं तो हारी।

तुझे मनाऊं कैसे रसिया, भर-भर आवे मेरा जीया।

तुमसे बिछुड़े सदियां बीती, आन मिलो अब मेरे पीया।

काहे नाथ लगाओ देरी, जनम-जनम की तेरी चेरी।

आंसू की बरसात हुई है, कब महकेगी बगिया मेरी।

मनुआ भटक-भटक यह जावे, कैसे मन को हम समझावें।

करो कृपा तुम मुझ पर स्वामी, चरणा तेरे तब ही पावे।

तुझे खोजते बीत रहे पल, झलक मिले जाये संकट टल।

मेरे मोहन रास रचैया, देख हमें जाये जीवन खिल।

इन नैनन में प्रभु बस जाओ, नहीं हमें अब नाथ सताओ।

*नैया मेरी डगमग डोले, अश्रु बहते तुम्हीं बचाओ।*91

हरे राम रामा राम राम, दुःख भंजक लो मेरा प्रणाम।

हम स्तुति प्रभु तेरी करते हैं, हरो पीड़ा तुम सुख के धाम।

बस जाओ हिय मेरे रामा, प्यार मिले तो जीवन महके।

जिय मिलने को तुमसे तरसे, मिलो नाथ तुम जीवन चहके।

तू संग मेरे डर लगे नहीं, काली रातें कितनी ही हों।

तम ठहर सके ना, हो प्रकाश, दुःख बादल छंटते तू संग हो।

नित खेल खिलावे नये-नये, खोजूं चहुं ओर छिपा तू ही।

तेरे बिन जियरा ना लागे, पूजा करती है सकल मही।

बहे जलधा में लहर बने हम, दीखे न कोई किनारा है।

कैसा तूने खेल रचा यह, जाने न साथ तुम्हारा है।

नमन तुझे प्रभु हम करते हैं, अज्ञान हरो तुम ना भूलो।

हरपल तुमको याद करें हम, अन्तस की खिड़की प्रभु खोलो।

92

टूटे भी तो ऐसे टूटे, उठा नहीं अब जाता।

नीर बहे स्वीकार करो तुम, मेरे भाग्य विधाता।

जीवन की इस पगडण्डी पर, भटका तुझे न पाया।

जाती संधया तुझे पुकारे, दे दो अपना साया।

विरह अग्नि को नाथ बढ़ा दे, तुम बिन रहा न जाता।

भस्म होंय छूटें सारे दुःख, जीवन रीता जाता।

तुम दुनिया के मालिक हो प्रभु, दीन अबल हम स्वामी।

घट-घट की जानो प्रभु तुम तो, हो तुम अन्तर्यामी।

डूब रही यह मेरी नौका, नहीं किनारा दीखे।

रो रो प्राण पुकारें तुमको, तुम बिन नाहीं दीखे।

द्वार पड़ा हूं राह दिखा दो, प्यासा प्यास मिटा दो।

*गीत मेरे आंसू से पूरित, खोंजे साज बजा दो।*93

सभी जाने को आये यहां, सब ही जायेंगे इस जग में।

अन्तस में ढूंढ़ा हरि जिसने, छटंते हैं बादल फिर मग में।

हम घायल हैं हरि सुन लो तुम, मन डोले यह तो पागल है।

शरण पड़े हैं हम प्रभु तेरी, कृपा तेरी संकट कटते हैं।

प्राण पुकारे रो-रो कर है, बहते आंसू के नाले हैं।

अन्तस में प्रभु ज्योति जगा दो, तेरा पंथ निहारें हम हैं।

बहती जाती जीवन गंगा, हिय बस जाओ मन हो चंगा।

निर्बल का बल राम तुही है, देखो बहती आंसू गंगा।

सूखे पत्ते कुछ कहते हैं, धयान नहीं पर हम देते हैं।

दो पल का सारा जीवन है, हरि को भूल यहां रोते हैं।

कट जायेंगी काली रातें, भूल हरी मत मेरे मन ना।

जप हरि को तू उसे बसा दिल, है अनजाना पथ तिमिर घना।

94

अश्रुओं से चरण धोते, दर्द लिये यह जायेंगे।

थके यहां चलते-चलते, ना पता कहां जायेंगे?

बाबले बन जगत घूमें, हम विवश बन राह देखें।

दे भुलावा ले मुझे चल, नीर अंखियों से न सूखें।

नीर बह तुझको बुलायें, और नहीं संगीत भाये।

डूब जाऊं बस इसी में, अर्चना यही मन भाये।

क्या प्रयोजन है जगत का, सांस यह क्यों चल रही है।

खिलते तेरी बगिया में, आंख गम में रो रही है।

कर रहे शोषण यहां पर, जानते रहना नहीं है।

हारे पाई ना खुशियां, चांद जीवन का तुही है।

प्यार की हम भूख रखते, प्यार दे दूं प्यार ले लूं।

*बह रहे यह नीर मेरे, चाह है तुझ चरण पा लूं।*95

दर्द कहें किससे अपना हम, सब ही रोयें अपना दुखड़ा।

हरि में जिय यह ना ही लागे, कैसे पावे मन का पिंड़ा।

उलझे भूल भुलैया में हम, प्रीति तुम्हारी ना पा सके।

तुम बिन अंखियां बरस रही हैं, कैसे मेरी बगिया महके?

तुम अनन्त के स्वामी प्रभु जी, बालक हम नादान यहां है।

व्यथित कर रही दिल को पीड़ा, मोहन मेरे छिपा कहां है?

हम है अबल कांपते यह पग, जिवड़ा मेरा करता धाक-धाक।

नौका मेरी डूब न जाये, हार गई यह आँखियां तक-तक।

हाय विवशता की चक्की में, कोल्हू के हम बैल हुए हैं।

जाती यह जीवन की सांसे, तुम बिन हम बेहाल हुए हैं।

चरण पड़े हम दास तुम्हारे, मुझको जीवन देने वाले।

चलता जाऊं प्रभु पथ तेरे, कृपा करो मेरे रखवाले।

96

मैं भटकता फिर रहा था, ना मिला मुझको किनारा।

डूबती किस्ती सम्भालो, बस मुझे तेरा सहारा।

दूर करना ना मुझे तुम, निकले मुख तेरे बयना।

सह सकूं सब दंश जग के, ना छोडू तेरे चरना।

अबल हम तुम सबल हो प्रभु, थामो यह मेरी बैंया।

नीर अंखियों से बहे हैं, रूठ न तू मेरा सैयां।

हम कहां जाये बता दो, दीखती मंजिल नहीं है।

आग जो दिल में लगी है, कर सके वर्षा तुही है।

रो रहे स्वीकार कर लो, तुम क्षमा का दान दे दो।

घूमते अज्ञान में हम, ज्ञान का दीपक जला दो।

कर्म बंधान में बंधाा प्रभु, राह तुम्हारी ताकता।

*अर्चना तेरी करें प्रभु, तू सब दुःखो को काटता।*97

पार ले चलो इस नदिया से, रो-रो मनुआ तुझे पुकारे।

तुम बिन मेरा मन ना लागे, आओ मोहन जीवन संवरे।

अपने द्वार बिठा लो मुझको, किसे सुनाये अपनी पीड़ा?

बीत रही यह दुःख की घड़ियां, रास न आई हमको क्रीड़ा।

सृष्टि रचियता जग के पालक, दुःख को दूर करो दुःख भंजक।

अगम अगोचर पार न तेरा, जियरा मेरा करता धाक-धाक।

बरसे मेघ प्यार को पा लूं, चरणा पड़ू कुछ भी ना जानूं।

बगिया जीवन की लहराये, ज्ञान मुझे दे तुझको मानूं।

मेरे सर्जक भाग्य विधाता, नौका भटके पार लगा दो।

रूठो मत मेरी सुधि को लो, रोती अँखियों को हर्षा दो।

छूट रहे हैं सभी सहारे, लाज रखो हम तुझे पुकारे।

बस जाओ मेरे नैनन में, गम बिसरें फिर मेरे सारे।

98

हरि कैसे मैं तुमको पाऊं, उलझी रहे कीच में काया।

पाप पुण्य दुःख-सुख की छाया, मनुआ यह हरपल भरमाया।

जलते रहे सदा जीवन भर, नहीं पा सके हाय अमी जल।

नाथ हमें इस तरह न छोड़ो, नीर बहायें नयना हरपल।

निर्माता तुम सारे जग के, सर्जक हो तुम सारे घट के।

मेरा मन बैचेन हो रहा, तड़फ मिटे न बिन साजन के।

राम-राम हरि तुझे पुकारे, करो कृपा यह जीवन संवरे।

अज्ञानी हम बल ना कोई, अनजाना पथ जियरा सहरे।

प्यार मांगते कुछ ना चाहे, बैठ चरण में रोना चाहें।

जन्मों-जन्मों से भटक रहे, कुछ ना दीखे अन्धी राहें।

ज्ञान जगा दो प्यार दिखा दो, अबल प्रभु नहीं हमें सजा दो।

*सद्कर्मों को सदा करें हम, सुमरे सदा तुझे यह वर दो।*99

बही जाती जिन्दगी यह, हर लहर संग छोड़ जाती।

साथ कोई रह न पाये, नीर अँखियां यह गिराती।

मिलते बिछुड़ते हम यहां, खेल कब से चल रहा है।

प्यार ही बस है सनातन, जो यहां पर बह रहा है।

प्यार से देखो जहां को, ना यहां कुछ भी रूका है।

चाह है आकाश की पर, शूल छोटा चुभ रहा है।

अवश हम कितने यहां है, लहर का है जाल देखो।

प्रीति अन्तस की जगे तो, हर तरु है जलधा देखो।

मानता यह मन नहीं है, बह रही आंसू की गंगा।

खोजते हम फिर रहे है, कैसे यह मन होय चंगा।

अर्चना स्वीकार कर लो, ओ जलधा तुम ज्ञान दे दो।

चाह मेरी हम बहे संग, हम नहीं यह भान दे दो।

100

तुम नहीं रूठो हे हरि मुझसे, अपने चरणों की रज दे दो।

सुमर सुमर तुमको सुख पावें, नैया मेरी पार लगा दो।

जीवन छोटा तू कित बैठा, इन अंखियों का नीर न सूखा।

भये बाबले यहां भटकते, तुम बिन मेरा जीवन रूखा।

बने शून्य तुम सृष्टि नचावो, हरपल संग काहे भटकावो।

रो-रो जियरा हार गया है, करो कृपा तुम अब ना सोवो।

कण-कण में तू बसा हुआ है, जाने ना खोजें कैसी गति ?

अंखियों का पानी ना सूखे, करो कृपा जो होवे सद्गति।

हरि-हरि कहते खो जाये हम, संग मेरे तू लागे हरदम।

सद्कर्मो में हमें चलाना, रमूं तुझी में बल दे प्रियतम।

नमस्कार तुमको करते हैं, जग संचालक तुम हो पालक।

पाप पुण्य के पार छिपे तुम, करूणा करना मुझ पर धाारक।